शोध मंथन Vol. XIII No.IV Oct.-Dec. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

बौद्ध धर्म एवं राजकीय संरक्षण छठी शताब्दी ई० से 12वी शताब्दी ई० तक

प्राप्तिः 11.11.2022
स्वीकृतः 25.12.2022

90

प्रो० शशि नौटियाल
इतिहास विभाग
जे०वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर (उ०प्र०)
ईमेलः *shashijvjc@gmail.com*

रवि कुमार
शोधार्थी, इतिहास विभाग
जे०वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर (उ०प्र०)
ईमेलः *ravikapil9794@gmail.com*

सारांश

छठीं शताब्दी के एक सुधार आन्दोलन से एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त धर्म तक की बौद्ध धर्म की यात्रा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान राजकीय संरक्षण का रहा है। महात्मा बुद्ध के समकालीन हर्यक वंश के शासक बिम्बिसार से लेकर पाल वंश के देवपाल तक अनेक शासकों ने बौद्ध धर्म को संरक्षण देकर इसे पराकष्ठा पर पहुँचाया। इस क्षेत्र में न केवल भारतीय शासक अपितु मिनाण्डर, कनिष्क, जैसे गैर भारतीय शासकों ने बौद्ध संगीतियों से लेकर अभिलेखों, बौद्ध विहारों एवं विदेशों में दूत भेजने तक के विविध माध्यम अपनाकर बौद्ध धर्म को समस्त जम्बूद्वीप नेपाल, तिब्बत, मध्य एशिया, चीन, जापान और दक्षिण पूर्वी एशिया तक प्रसारित किया। शासकीय संरक्षण के अतिरिक्त कई अन्य वर्गों, व्यापारी वर्ग, गृहस्थजन, प्रशासकीय वर्ग के आर्थिक समर्थन ने भी इसके प्रसार एवं विकास में सराहनीय योगदान दिया।

मुख्य बिन्दु

राजकीय संरक्षण, बौद्ध संगीतियाँ, अभिलेख, जम्बूद्वीप।

बौद्ध धर्म के प्रसार में राजकीय संरक्षण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महात्मा बुद्ध स्वयं राजकुल से सम्बंधित थे। अतः तत्कालीन क्षत्रिय शासकों ने जो स्वयं अपने– आपको पुरोहितों के अधिपत्य से स्वतंत्र कर अपनी सर्वोच्च सत्ता स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने बुद्ध के सिद्धान्तों को प्रतिक्रिया स्वरूप स्वीकार कर लिया। बुद्ध के जीवन काल में ही बिम्बिसार, अजातशत्रु, प्रसेनजित इत्यादि शासकों ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया जबकि अशोक, कालाशोक, कनिष्क, मिनाण्डर, हर्षवर्धन एवं पाल शासकों का भी संरक्षण बौद्ध धर्म को अनवरत प्राप्त हुआ।

बौद्ध धर्म को सबसे शक्तिशाली महाजनपद मगध के शासक बिम्बिसार का सर्मथन था। जैन स्त्रोतों के अनुसार बिम्बिसार महावीर का अनुयायी था। उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार बिम्बिसार ने अपनी पत्नियों एवं प्रचारकों के साथ मिलकर महावीर की शरण ली, उनकी पत्नी चेल्लना जैन धर्म की अनुयायी थी। वहीं दूसरी और बौद्ध स्त्रोत में बताया गया है कि बिम्बिसार महात्मा बुद्ध का मित्र व संरक्षक था। उनकी बुद्ध से प्रथम भेंट ज्ञान प्राप्ति के सात वर्ष पहले हुई। दूसरी भेंट ज्ञान प्राप्ति के बाद राजगृह में हुई जब महात्मा बुद्ध अपने कुछ शिष्यों के साथ राजगृह आये थे। विनयपिटक के अनुसार बिम्बिसार ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया तथा बुद्ध व संघ को ''वेलूवन'' नामक

उद्यान भेंट किया। एक अन्य अवसर पर बिम्बिसार ने राजवैद्य जीवक को बुद्ध व उसके अनुयायियों का वैद्य नियुक्त किया। न केवल बिम्बिसार अपितु उनकी पत्नी मद्र शासक की पुत्री खेमा भी बौद्ध धर्म से बहुत प्रभावित थी। कौशल नरेश प्रसेनजीत को खेमा ने ही बौद्ध धर्म में दीक्षित किया। खेमा का बौद्ध भिक्षणी संघ में भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

बौद्ध स्त्रोत बिम्बसार का महात्मा बुद्ध के प्रति श्रष्द्धाभाव को प्रदर्शित करते हैं जबकि जैन स्त्रोत बिम्बिसार एवं महावीर स्वामी की मण्डीकुक्षी में भेंट का उल्लेख करते हैं एवं उन्हें महावीर का अनुयायी होने का दावा करते हैं। बिम्बिसार, बौद्ध धर्म, जैन धर्म के साथ–साथ ब्राहमणों के प्रति भी सहिष्णु थे। जैन स्त्रोतों के अनुसार बिम्बिसार महावीर स्वामी से प्रभावित थे। संन्यासी भिक्षुओं के स्वामी महावीर थे ''मण्डीकुक्षी चैत्य'' के अनुसार बिम्बसार ने अपनी रानियों, कर्मचारियों, सगे–सम्बन्धियों सहित महावीर से भेंट की व महावीर का अनुयायी बन गया दीघनिकाय के अनुसार बिम्बिसार ने चम्पा के प्रसिद्ध ब्राहमण ''सोनदण्ड'' को सम्पूर्ण धन दान में दे दिया था। इस प्रकार बौद्ध धर्म के साथ– साथ अन्य धर्मों के प्रति भी श्रष्द्धाभाव रखते थे।

बिम्बिसार के पश्चात उसके पुत्र अजातशत्रु ने भी अपने पिता की परम्परा का पालन किया उन्होंने महात्मा बुद्ध से भेंट की एवं इसका प्रमाण हमें मध्य भारत में स्थित भरहूत स्तूप के पश्चिमी द्वार के रेलिंग स्तम्भ पर दिखाई देता है, एवं उस पर ''अजातशत्रु भगवतों वन्दते'' अर्थात अजातशत्रु महात्मा बुद्ध की वंदना कर रहे हैं, अंकित है। वज्जिसंघ के साथ मगध के युद्ध में अजातशत्रु ने महात्मा बुद्ध से वज्जियों को हराने के लिए परामर्श लिया। मगध के उत्तर में मल्ल एवं लिच्छवि गणराज्य स्थित थे। वैशाली का वाज्जिसंघ एक शक्तिशाली गणराज्य था जिसमें नौ मल्ल नौ लिच्छवि एवं काशी और कौशल समेत अटठारह शासकों का एक संगठन बना लिया था। मगध एवं वज्जिसंघ के मध्य गंगानदी पर एक बन्दरगाह एवं खदानें थी। पूर्व संधि के अनुसार बन्दरगाह एवं खदानों पर समान रूप से दोनों का अधिकार था लेकिन पर्याप्त समय से वज्जिसंघ इन पर अधिकार जमाये हुए थे। अजातशत्रु ने इस विवाद का निपटारा शस्त्र बल से करने का निश्चय किया। अजातशत्रु के शासनकाल में मगध का लिच्छवियों का द्वेष के कारण नेपाल की तराई की तलहटी में स्थित रत्नों की खान, सयनाग हाथी को प्राप्त करने एवं मुख्यतया गंगा ओर से जाने वाले व्यापार पर प्रभुत्व स्थापित करना था।

महापरिनिर्वाण सुत के अनुसार जब अजातशत्रु निरंतर प्रयासों के बावजूद वज्जिसंघ को पराजित करने में असफल रहा तो उन्होंने अपने मंत्री वस्सकार को महात्मा बुद्ध के पास वज्जियों को पराजित करने के उपाय को जानने के लिए भेजा, जिसका उत्तर महात्मा बुद्ध द्वारा यह कहकर दिया गया कि जब तक वज्जिसंघ धम्म का पालन करते रहेगें उनको नष्ट नहीं किया जा सकता। वज्जियों को मगध राजा किसी युद्ध में नहीं अपितु कूटनीति के सहारे और उनके बीच के सौहार्द को तोड़ने के बाद ही जीत सकते हैं। इसी कूटनीति का पालन कर वज्जियों को हराने के लिए इसके अनुरूप रणनीति तैयार की गई एवं वज्जियों पर आठ वर्ष के संघर्ष के बाद विजय प्राप्त की। मगध के हर्यक वंश के पश्चात् शिशुनाग वंश के शासक कालाशोक के काल के दौरान द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता का आयोजन आन्तरिक मतभेदों को दूर करने के लिए किया किन्तु इस संगीति का अंत बौद्ध धर्म के प्रथम विभाजन में हुआ। महासाधिक एवं थेरवाद। बुद्ध का व्यक्तित्व इनकी शिक्षाओं की सरलता एवं सुबोधता, बौद्ध संघों का, राजकीय संरक्षण, लोक भाषा का प्रयोग जाति व ऊँच–नीच का अभाव आदि ने बौद्ध धर्म के प्रसार को सुगम बनाया।

मोर्य सम्राट अशोक के समय तक आते–आते आपसी संघर्ष और मतभेद के चलते ही बौद्ध धर्म 18 सम्प्रदायों में विभक्त हो गया। अशोक ने व्यक्तिगत रूप से बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया। अतः उसने आन्तरिक संघर्षों, विवादों एवं उप सम्प्रदायों को समाप्त कर एकता स्थापित करने के लिए तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन पाटलीपुत्र में मोगलीपुत्र तिस्स की अध्यक्षता में करवाया। अशोक का बौद्ध धर्म के साथ सम्बन्ध बौद्ध साहित्य में एवं अभिलेखों में प्रतिबिंबित होता है।

अशोक महान सम्राट होने के साथ एक बौद्ध उपासक भी था। अशोक का संघ के साथ गहरा सम्बन्ध तो था ही। साथ ही अपने समकालीन सभी प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षुओं के साथ भी उसका सम्बन्ध था। जिसमें उपगुप्त प्रमुख थे। जिनसे अशोक ने बौद्ध धर्म की शिक्षा ग्रहण की थी। बुद्ध के स्मर्षति अवशेषों के पुनः वितरण का एवं उनके स्तूपों में स्थापना का श्रेय अशोक को ही जाता है। अशोक को 84000 स्तूपों और विहारों के निर्माण का श्रेय दिया गया है। अशोक के बारे में बौद्ध साहित्यों में यह वर्णन मिलता है कि उसने बुद्ध के जीवन से जुडे सभी महत्वपूर्ण स्थानों का परिभ्रमण किया और उन स्थानों पर अभिलेख खुदवाये। प्राचीन भारत के राजवंशों में मौर्य साम्राज्य का प्रतापी सम्राट अशोक बौद्ध धर्म का सबसे बडा अनुयासी एवं आश्रयदाता रहा है। उसके 13वें अभिलेख से ज्ञात होता है। कलिंग विजय की रक्तिम क्रीड़ा ने उसकी राज्यविजयलिप्सा को धम्मविजय में परिवर्तित किया। बौद्ध धर्म के स्पर्श से ही वह सम्राट से पिय्यदसी बन गया था। उसने बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ अपने राज्य से धर्म प्रचारक भेजे थे।

अशोक ने अपना सारा जीवन और साम्राज्य की सारी शक्ति बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार एवं उसके उच्चादर्शों को आम जन तक पहुंचाने में लगा दी। बौद्ध धर्म के संरक्षक के रूप में अशोक ने बहुत काम किया।

सम्राट अशोक के उत्तर कालीन राजवंशों ने भी इस प्रकार कार्य में भरपूर योगदान किया। कुषाण वंश के शासक कनिष्क ने, उसके बाद गुप्त वंश के राजाओं ने अशोक द्वारा प्रचारित इस ध र्म प्रचार कार्य को मध्य एशिया, चीन, जापान, तिब्बत, बर्मा, थाइलैण्ड, कम्बोडिया और श्रीलंका आदि देशों में प्रचारित–प्रसारित करवाया।

अशोक ने बौद्ध धर्म के लिए प्रचारार्थ यात्राएं की। वह अपने अभिषेक के दसवें वर्ष बौधगया की यात्रा पर गया यह उसकी पहली धर्म यात्रा थी अपने चौदहवें वर्ष में नेपाल की तराई में स्थित निम्लीवा (निगाली सागर) में जाकर उसने कनकमुनी बुद्ध के स्तूप के आकार को द्विगुणित करवाया। बीसवें वर्ष वह बुद्ध के जन्म स्थल लुम्बिनी ग्राम गया और वहाँ रूम्मिनदेई अभिलेख स्थापित करवाया। इस अभिलेख के अनुसार अशोक की इस क्षेत्र की यात्रा से जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा और वह बौद्ध धर्म की ओर आकष्ट हुए।

अशोक का साम्राज्य बहुत बडा था। अशोक ने अपने साम्राज्य के उच्चपदाधिकारी को भी धर्म प्रचार के काम में लगाया। स्तम्भ लेख तीन एवं सात से ज्ञात होता है कि उसने व्युष्ट रज्जुक, प्रादेशिक तथा युक्त नामक पदाधिकारियों को जनता के बीच जाकर धर्म प्रचार एवं उपदेश करने का आदेश दिया। ये अधिकारी पाँचवें वर्ष अपने– अपने क्षेत्र के दौरे पर जाया करते थे तथा सामान्य प्रशासकीय कार्यों के साथ जनता में धर्म का प्रचार किया करते थे।

बौद्ध धर्म को विदेशों में प्रचार करने का श्रेय अशोक को ही जाता है। 13वें शिलालेख में वह अपने दूतों के नाम दर्शाता है। अशोक के धर्म प्रचार की ख्याति को सुनकर कुछ यूनानी बौद्ध बन गये और पश्चिम एशिया में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार हुआ। अशोक के राज्यकाल में पाटलिपुत्र

में बौद्ध धर्म की तष्तीय संगीति हुई, इसकी अध्यक्षता मोगलीपुत्र तिस्स नामक बौद्ध भिक्षु ने की थी। इस संगीति की समाप्ति के बाद विभिन्न देशों में बौद्ध धर्म के प्रचार भिक्षु भेजे गये। इनमें से प्रमुख मज्झत्तिक, महारक्षित मज्झिम एवं महेन्द्र संघमित्र थे, जिनके प्रयासों से कश्मीर, गंधार, यवन देश, हिमालय क्षेत्र एवं श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ। श्रीलंका में भेजे गये बौद्ध प्रचारक महेन्द्र और संघमित्रा को अत्यधिक सफलता मिली। महेन्द्र ने वहाँ के शासक तिस्स को बौद्ध धर्म में दीक्षित कर लिया था। अशोक ने स्वदेश व विदेशों में बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार किया। इस प्रकार बौद्ध धर्म भारत की सीमाओं को पार कर एशिया के विभिन्न भागों में फैल गया और यह अन्तर्राष्ट्रीय धर्म बन गया।

अशोक बौद्ध धर्म के प्रभाव में मानवता के और निकट आया। यह नई सोच छठा अभिलेख में देखने को मिलती है। इसमें अशोक ने यह घोषणा कर दी कि उसके राज्य की सारी जनता उसकी संतान थी एवं कई बार उसने अपने स्थानीय राज्यपालों को इस दषष्टिकोण को पूर्णतः प्रयुक्त करने को कहा, उसने मनुष्य तथा पशुओं के प्रति हिंसा न करने के सिद्धांत का निष्ठापूर्ण प्रतिपादन किया, इसके पश्चात् उसने सभी लोगों के मध्य तत्कालपूर्वक प्रचार करके कम से कम राजधानी में पशु वध ा पर पूर्णतः प्रतिरोध आरोपित कर भोजन के लिए पशुओं का वध सीमित कर दिया। अशोक को इस बात की खुशी थी कि उसने भारतीय राजाओं की परम्परागत चली आ रही क्रीड़ा–आखेट प्रस्थानों को बौद्ध तीर्थ स्थानों की यात्राओं में बदल दिया था। उसने राजमहलों में मांस भक्षण आदि को अनुपात में लाकर नियमित कर दिया था।

अशोक हृदय परिवर्तन के पश्चात एक बौद्ध धर्म स्वावलम्बी था। उसने बौद्ध धर्म को वह एक नैतिक प्रणाली के रूप में ग्रहण किया, जिसने पष्वी पर शांति तथा परलोक में स्वर्ग का पथ प्रदर्शन किया। अशोक को ज्ञान से सम्बन्धी पूर्व कल्पना प्रत्यक्ष रूप से बौद्ध धर्म के अनुरूप नहीं थी, अपितु तत्कालीन भारतीय परम्पराओं के अनुसार थी।

अशोक का बौद्ध धर्म उत्साहमय था, लेकिन किसी अन्य धर्म या संप्रदाय का प्रतिरोधी नहीं था। अशोक ने बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण के साथ– साथ अन्य सम्प्रदायों को भी प्रोत्साहित किया। इसने कई बार घोषणा की कि सभी सम्प्रदाय समान सम्मान तथा अधिकार के हकदार हैं। उसने आजीवक सम्प्रदाय के उपासकों को कषत्रिम गुफाएँ भेंट कीं जो बौद्ध धर्म के प्रमुख विरोधी में से एक थे।

बौद्ध धर्म ने न केवल मूल भारतीय शासकों को प्रभावित किया अपितु विदेशी मूल के शासकों को भी प्रभावित किया। कुषाण काल में बौद्ध धर्म का भारत में ही नहीं अपितु अनेक मध्य एशिया के देशों में भी प्रचार– प्रसार हुआ। इस युग में विशाल स्तूपों और विहारों का निर्माण हुआ। इस काल की सबसे बड़ी उपलब्धि महायान बौद्ध धर्म का अभ्युदय एवं विकास है। बौद्ध कला में भगवान बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। मथुरा और गंधार इस मूर्तिकला के प्रसिद्ध केन्द्र थे। गंधार शैली में महात्मा बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी मूर्ति कला शैली से पूर्णतया प्रभावित थी जबकि मथुरा मूर्तिकला विदेशी प्रभाव से पूर्णतः मुक्त थी।

कुषाण सम्राट कनिष्क पहले शैव एवं वैष्णव धर्म के अनुयायी थे बाद में उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। इस धर्म की सार्थकता का उसने अनुभव किया और उसका प्रचार– प्रसार करने के साथ–साथ अपने राजकीय संरक्षण में चतुर्थ बौद्ध संगीति का अयोजन करवाया। अश्वमेघ, वसुमित्र इस युग के प्रसिद्ध बौद्धाचार्य थे। इस संगीति के दो सत्र हुए प्रथम सत्र या प्रथम अधिवेशन या

पुरूषपुर (पेशावर) के कनिष्क महाविहार में हुआ जिसके अध्यक्ष पार्श्व स्थविर थे और उपाध्यक्ष वसुमित्र थे। दूसरा अधिवेशन कश्मीर के कुण्डल वन बिहार में हुआ जिसके अध्यक्ष वसुमित्र और उपाध यक्ष अश्वमेघ थे।

चतुर्थ बौद्ध संगीति का प्रभाव यह हुआ कि बुद्ध भक्ति, बुद्ध प्रतिमा, बुद्ध पूजा तथा गुफाओं और वनों में बुद्ध ध्यान प्रचलित हुआ जिसके प्रभाव से बुद्ध और बौद्धिसत्वों की प्रतिमाओं से सारनाथ, मथुरा, गंधार, अजन्ता और एलोरा आदि स्थानों तथा बौद्ध विद्या केन्द्रों में कला वीथियां रची गयी। गान्धार से लेकर पश्चिमी चीन की सीमा तक बुद्ध और उनका क्षेत्र स्थापित हुआ।

कनिष्क का साम्राज्य मध्य एशिया तक फैला हुआ था। भारतीय राज्य की सीमा उत्तर में कश्मीर से सिंध तक, पूर्व में बनारस तक, दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत तक थी। कनिष्क द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार करने के पश्चात् उसने तांबे के सिक्कों पर बुद्ध की मूर्ति का अंकन करवाया। उसने बौद्ध भिक्षुओं के लिए बहुत से विहार, स्तूप आदि बनवाये इसने पेशावर के बाहर एक बडी मीनार बनवाई जिसमें गौतमबुद्ध की अस्थियों के तीन टुकडे रखे गये। यह मीनार लकड़ी की 400 फीट ऊँची थी। कनिष्क विद्वानों का आदर करता उसकी सभा में नागार्जुन, अश्वमेघ जैसे बौद्ध धर्म के विद्वान थे।

बौद्ध धर्म के इतिहास में कनिष्क का युग महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। वह बौद्ध परम्परा में बौद्ध धर्म के महान संरक्षक के रूप में उभरकर सामने आये। कनिष्क के ही शासनकाल में बौद्ध धर्म मध य एशिया तथा पूर्व तक विस्तृत होना प्रारम्भ हुआ था। कनिष्क के समय में बौद्ध धर्म का प्रभाव चीन तक पहुँचा क्योंकि कुषाण एवं चीनी साम्राज्य के मध्य सम्पर्क अच्छे थे। यह समय गन्धार कला शैली के लिए भी अधिक प्रसिद्ध था जो भारत में ही नहीं वरन मध्य एशिया व पूर्व तक प्रभावशाली था। वसुमित्र एवं अश्वमेघ जैसे बौद्ध विद्वानों को कनिष्क का संरक्षण प्राप्त था। उसने काशगर, यूनान तथा चीन में बौद्ध विद्वानों को भेजा। कनिष्क के सिक्कों में बौद्ध यूनानी और पश्चिम एशियाई धार्मिक परम्पराओं के प्रतीक सम्मिलित किए गए है। बुद्ध एवं शिव के प्रदर्शन के अतिरिक्त कनष्कि के शासनकाल में इसके द्वारा निर्मित सिक्कों में ईरानी देवता अतश (अग्नि के देवता), मिथिर (एक सौर देवी) इत्यादि का भी प्रदर्शन देखने को मिलता है। इसके द्वारा निर्गत सिक्कों में धार्मिक प्रतीकों के आधार पर वह व्यक्तिगत रूप से सर्व धर्म समभाव तथा धार्मिक सहिष्णुता के सिद्धान्त में विश्वास रखता था।

इण्डो– ग्रीक शासकों में सबसे महान शासक मिनाण्डर बौद्ध धर्म के संरक्षक थे। नागसेन रचित 'मिलंदपन्होंजो कि वास्तव में मिनाण्डर एवं नागसेन के मध्य संवाद है, से यह ज्ञात होता है। मोर्योत्तर युग में भारत पर विदेशी आक्रमणकारियों में प्रथम यूनानी, यवन, इण्डो–ग्रीक, हिन्द यूनानी या बैक्ट्रियन ग्रीक थे। मध्य एशिया की तत्कालीन राजनीति से बाध्य होकर उन्हें भारत विजय की योजना बनानी पड़ी। डेमेट्रियस के सेनापति के रूप में उसके साथ भारत आया था। उसी ने मथुरा, पांचाल, साकेत और पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया एवं सोन नदी तक आगे बढ गया किन्तु पुष्यमित्र शुंग द्वारा परास्त होकर उसे वापस लौटना पड़ा। डेमेट्रियस के पश्चात् युक्रेटाइडस द्वारा बैट्रिया पर अधिकार करने और उसके बाद राजनीतिक घटनाक्रम ने मिनाण्डर को सत्ता प्राप्त करने का अवसर दिया।

मिनाण्डर एक विजेता के रूप में ही नहीं वरन् बौद्ध धर्म के प्रति अनुराग के कारण भी उसकी प्रशंसा की जाती है। सम्भवतः वह पहला हिन्द यूनानी शासक था जिसने बौद्ध धर्म में गहरी अभिरूचि ली तथा बौद्ध धर्म अपनाया एवं बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया।

अशोक व कनिष्क के पश्चात् यदि बौद्ध धर्म को राजश्रय देने में किसी शासक का नाम आता है, तो वह पुष्यभूति वंश के शासक हर्षवर्धन का है। बौद्ध धर्म के अनुयायी बनने से पूर्व हर्षवर्धन शैव धर्म के अनुयायी थे। हर्ष ने परम महेश्वर की उपाधि ग्रहण की थी। हर्ष की मुद्रा पर शिव के वाहन नंदी का चिन्ह अंकित है। हर्षवर्धन ने रत्नावली नाटिका का प्रारम्भ भी शिव तथा पार्वती की पूजा से ही किया था। हर्ष धार्मिक सहिष्णुता का पालन करता था। ह्वेनसाँग के उल्लेखों में हर्ष द्वारा बौद्ध धर्म को स्वीकार किये जाने का प्रमाण तो प्राप्त होता है परंतु हर्ष ने कब और क्यों धर्म परिवर्तन किया था इस बात के प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं।

बाणभट्ट के अनुसार विंध्यावटी में निवास करने वाला बौद्ध भिक्षु दिवाकर मित्र की ख्याति से प्रभावित होकर हर्ष ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था तथा राज्यश्रय की खोज में दिवाकर मित्र द्वारा सहयोग करने से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया। हर्ष ने बौद्ध धर्म की दीक्षा दिवाकर मित्र से ही प्राप्त की थी लेकिन हर्षवर्धन पहले भी बौद्ध धर्म के प्रति अनुराग रखता था। जैसे दिवाकर मित्र से मिलने का विचार एवं राज्यवर्धन का बौद्ध धर्मानुयायी होना आदि। हर्ष के धर्म परिवर्तन का शिलान्यास करने का श्रेय राज्यवर्धन को ही जाता है। हर्ष ने अशोक की भाँति युद्ध में प्रयुक्त की गई हिंसा की प्रतिक्रिया स्वरूप बौद्ध धर्म को स्वीकार नहीं किया था अपितु अपने बडे भाई राज्यवर्धन के विचारों तथा दिवाकर मित्र के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर किया था। जैसा कि ह्वेनसाँग की पुस्तक सी–यू–की से विदित होता है कि अशोक तथा कनिष्क की तरह ही हर्षवर्धन ने भी बौद्ध धर्म को राज्यश्रय दिया। बौद्ध धर्म के संरक्षण तथा प्रचार–प्रसार के लिए अनेक कार्य किये हर्षवर्धन द्वारा माँस को निषेध किया गया तथा इसकी अवज्ञा करने वाले के लिए कठोर दण्ड का प्रावधान रखा गया। हर्ष ने उन मठों की मरम्मत करायी जो कि पहले से जीर्ण–शीर्ण अवस्था में थे। हर्ष ने अनेक नये बौद्ध विहारों, मठों तथा स्तूपों का निर्माण करवाया। हर्ष ब्राह्मणों के साथ– साथ बौद्ध भिक्षुओं को भी अपने राजकोष से खूब दान दिया करता था। बौद्ध धर्म के महायान मत के संरक्षक के रूप में हर्ष ने धर्म प्रचार के लिए अनेक कार्य किये जिसमें सबसे प्रमुख कार्य कन्नौज की धर्मसभा का अयोजन था। इस सभा का प्रारम्भ सम्राट हर्षवर्धन ने बुद्ध की प्रार्थना से किया। इस सभा के अन्तर्गत हर्षवर्धन ने बौद्ध धर्म के दोनों मत हीनयान व महायान एवं जैन भिक्षु, ब्राहमणों को भी आमंत्रित किया था तथा उनमें वाद–विवाद करवाया ताकि महायान मत को अन्य धर्मों से सर्वश्रेष्ठ बनाया जा सके। इन सभी कार्यों के परिणाम स्वरूप सम्राट हर्षवर्धन ने बौद्ध धर्म को राजकीय धर्म घोषित किया एवं इसका प्रचार–प्रसार किया।

हर्षवर्धन की मष्त्यु के पश्चात् उत्तर भारत की राजनीतिक स्थिति विकेन्द्रीकरण की ओर उन्नमुख हुई। राजनीतिक एकता एवं केन्द्रीय शक्ति को अभाव में धीरे–धीरे कई क्षेत्रीय शक्तियाँ अस्तित्व में आने लगी थीं। समाज में अराजकता को समाप्त करने हेतु पूर्वी भारत के बंगाल में एक दष्ढ़ सत्ता का उदय हुआ जिसमें बंगाल में पालों ने अपनी सत्ता स्थापित की। गोपाल नामक व्यक्ति ने पाल वंश की नींव रखी। पाल वंश की स्थापना गोपाल ने की परंतु इस वंश की प्रतिष्ठा को चरम पर पहुँचाने में उसके उत्तराधिकारियों ने अहम भूमिका निभायी। अधिकतर पाल शासक बौद्ध धर्मानुयायी थे। विभिन्न बौद्ध विहारों एवं मंदिरों के निर्माण में पाल शासकों ने योगदान दिया। पाल शासकों की नीतियाँ धर्मनिरपेक्ष थीं। पाल शासकों ने बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया एवं उनका प्रचार–प्रसार किया। औदंतपुरी विक्रमशिला विश्वविद्यालय का निर्माण पाल शासकों के द्वारा करवाया गया जिनका यश दूर–दूर तक फैला हुआ था। पाल शासन के अन्तर्गत न केवल बंगाल की गणना सबसे

बड़ी शक्तियों में की जाने लगी, अपितु यह बौद्धिक एवं कला सम्बंधी क्षेत्रों में भी उत्कष्ट हो गई थी। पाल शासकों ने बौद्ध धर्म को एक ऐसे समय में संरक्षण दिया जब हिन्दू सुधारवादी आंदोलनों के कारण बौद्ध धर्म की प्रतिष्ठा में भारत के अन्य क्षेत्रों में अत्यधिक कमी आ गई थी। पाल शासक ने बौद्ध धर्म की प्रसिद्धि को भारत के इस पूर्वी क्षेत्र में सर्वोच्चता के शिखर पर पहुँचाया। धर्मपाल ने स्वयं अपने शासन काल के दौरान अनेक निर्माण कार्य सम्पन्न करवाये। तारानाथ के अनुसार बौद्ध धर्म के उत्थान हेतु लगभग 50 केन्द्रों का निर्माण करवाया। इनमें से सम्भवतः 35 प्रज्ञापारमिता के अध्ययन केन्द्र थे। धर्मपाल ने विक्रमशिला महाविहार की स्थापना की जो मगध के उत्तर में गंगा के तट पर एक छोटी पहाड़ी पर स्थित था। विक्रमशिला अपने समय का सर्वश्रेष्ठ विहार था जो पूर्ण नियोजित व आवासीय था। विक्रमशिला विहार के मध्य में एक मन्दिर था जिसमें महाबोद्धि की मानव प्रतिमा स्थित थी। अन्य मन्दिरों की संख्या 108 थी। विक्रमशिला महाविहार में नालन्दा की भाँति बहुत सम्पन्न पुस्तकालय था वहाँ पर व्याकरण, तर्कशास्त्र, दर्शन न्याय, कला, आयुर्वेद और साहित्य की अलभ्य पुस्तकों का संग्रह था।

देवपाल, पाल वंश का सबसे प्रतापी शासक सिद्ध हुआ। उसने बौद्ध संरक्षक एवं विजेता के रूप में ख्याति प्राप्त की। देवपाल की विजयों का उल्लेख मुंगेर अभिलेख, नारायणपाल के बादल अभिलेख और भागलपुर से प्राप्त अभिलेख में है। देवपाल के शासनकाल के दौरान नालन्दा विश्वविद्यालय की ख्याति दूर–दूर तक फैली हुई थी। देवपाल के विदेशी शासकों से भी कूटनीतिक सम्बन्ध थे। जिसमें जावा एवं सुमात्रा के नरेश प्रमुख हैं। नालन्दा ताम्रपत्रों से पता चलता है कि शैलेन्द्र वंश के शासक बालपुत्रदेव के अनुरोध पर देवपाल ने राजगृह में चार और गया में एक गाँव दान दिया, बालपुत्रदेव को नालन्दा के समीप एक बौद्ध विहार बनवाने की अनुमति प्रदान की तथा धन भी दान में दिया। देवपाल बौद्ध धर्मानुयायी था, उसने नालन्दा एवं विक्रमशिला की मरम्मत करवाई तथा अनेकों बौद्ध मन्दिरों एवं विहारों को दान दिया। तारानाथ देवपाल को बौद्ध धर्म का पुनर्संस्थापक कहते थे।

महीपाल, देवपाल के पश्चात पाल वंश का सबसे प्रमुख शासक सिद्ध हुआ। जिनकी सबसे बडी उपलब्धि कम्बोजों का निष्कासन एवं अपने पूर्वजों द्वारा खोये हुए क्षेत्रों पर पुनः अधिकार कर महीपाल ने पाल साम्राज्य की खोयी प्रतिष्ठा पुनः स्थापित की। महीपाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था। उसने बनारस, बोधगया, नालन्दा में अनेकों बौद्ध विहारों एवं हिन्दू मन्दिरों का निर्माण करवाया।

पाल वंशीय शासकों ने अपनी योग्यता एवं कुशलता के माध्यम से राजनीतिक सभा का विस्तार कर भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ दिया। पालों का शासन न केवल राजनैतिक दृष्टिकोण से बल्कि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी काफी महत्वपूर्ण था। पाल वंश के लगभग सभी शासक बौद्ध धर्मानुयायी थे जिनकी नीतियाँ धर्मनिरपेक्ष थी। पाल शासकों ने बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया एवं उनका प्रचार–प्रसार किया।

बौद्ध धर्म को प्राप्त राजकीय संरक्षण से भारत एवं भारत से बाहर प्रसार में सहायता मिली। महात्मा बुद्ध स्वयं ही राजकुल में उत्पन्न हुए थे। अतः तत्कालीन क्षत्रिय– शासकों ने जो स्वयं अपने आपको पुरोहितों के अधिपत्य से स्वतंत्र कर सर्वोच्च सत्ता स्थापित करना चाहते थे। उन शासकों ने बौद्ध धर्म को ग्रहण किया एवं संरक्षण प्रदान किया। अशोक, कनिष्क, हर्षवर्धन एवं पाल शासकों ने इस परिपाटी को बनाए रखा एवं इसमें अशोक के काल में यह संरक्षण अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा। बौद्ध धर्म के प्रसार ने विदेशों के साथ भारतीय संस्कृति एवं कला के प्रसार में भी सहायता की।

राजकीय संरक्षण ने बौद्ध धर्म को सुरक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की। यहाँ यह भी गौरतलब है कि बौद्ध धर्म को प्राप्त राजकीय संरक्षण समाप्त होना कहीं न कहीं बौद्ध धर्म के पतन में सहभागी बना।

सन्दर्भ

1. सिंह, उपिन्दर. (2017). प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास. प्रकाशन पियर्सन इण्डिया एजुकेशन सर्विसेज प्रा0लि0. पृष्ठ **286–287.**
2. सिंह, प्रजापत पप्पू. (2018). प्राचीन भारत. प्रकाशक रॉयल पब्लिकेशनः 18, शक्ति कालोनी लोगो रोड, जोधपुर. पृष्ठ **260.**
3. वहीं. पृष्ठ **287–288.**
4. वापट, पी0बी0. (1956). बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष. ओल्ड सेक्रेटेरियरः दिल्ली. पृष्ठ **141.**
5. गुप्त शिव कुमार. (2003). प्राचीन भारत का इतिहास. प्रकाशक पंचशील फिल्म कालोनी. चौड़ा रास्ता जयपुर. पृष्ठ **2012.**
6. श्रीवास्तव, के0सी0. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कषति. प्रकाशक युनाइटेड बुक डिपोः यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद. पृष्ठ **231–232.**
7. यमुना, डा0 लाल. (1993). भारत एवं विश्व में बौद्ध प्रचारक. प्रतिभा प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **56.**
8. बाशम, ए0एल0. अद्भुत भारत. प्रकाशक शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनीः आगरा. पृष्ठ 42.
9. शर्मा, रमेश चन्द. (1994). मथुरा कला और संग्रहालय का वैभव. प्रकाशन डी0के0 प्रिंटवर्ड पृष्ठ **58.**
10. सिन्हा, जे0बी0. महात्मा बुद्ध तथा भारत के बौद्ध तीर्थ. पृष्ठ **33.**
11. ह्वेनसाँग. अनुवादक भारत ठाकुर प्रसार. ह्वेनसाँग की भारत यात्रा. पृष्ठ **109–113.**
12. वहीं. पृष्ठ **109–114.**
13. पाठक, डॉ0 विशुद्धानंद. (1977). उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास (600ई0 से 1200ई0) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थानः लखनऊ. पृष्ठ **151.**
14. भार्गव, पीयूष. (1996). पाल शासकों के राजत्वकाल में बौद्ध धर्म एवं बौद्ध कला. भारत बुक सेंटर 17. अशोक मार्गः लखनऊ.
15. पाण्डे, गोविन्द चन्द. (1963). बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास. लखनऊ. पृष्ठ **263.**
16. लामा, रिगजिन लुण्डुप. (1971). भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास. श्री काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थानः पटना.
17. विद्यालंकार, सत्यकेतु. (1980). मध्य एशिया तथा चीन में भातीय संस्कृति. श्री सरस्वती सदन मसूरी एवं सफदरजंग एन्क्लेवः नई दिल्ली–16.